P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-9* ISSUE-2* October- 2021
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

कोटा के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन''

Resolve the Refinement of The Process of Communication in Processing and Business Processing in Earlier Updates of Quotas

Paper Submission: 10/10/2021, Date of Acceptance: 23/10/2021, Date of Publication: 24/10//2021

पिंकी व्यास
शोधार्थी
शिक्षाशास्त्र,
करियर पॉइन्ट
यूनिवर्सिटी, कोटा,
राजस्थान, भारत

मधु कुमार भारद्वाज
पी.एच.डी. पर्यवेक्षक,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
करियर पॉइन्ट
यूनिवर्सिटी, कोटा,
राजस्थान, भारत

सारांश

व्यक्ति के अन्दर शिक्षा के प्रति सकारात्मक लक्ष्यात्मक दृष्टिकोण होता है जो शिक्षा के उद्देश्यों को पूरा करता है उसे शिक्षक बनने योग्य औपचारिकता प्रदान करता है। एक शिक्षक योग्य तभी कहलाता है, जब उसकी शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति सकारात्मक हो, अपने विषयगत अध्ययन पर विशेषता प्राप्त हो, छात्रों में छूपी हुई आन्तरिक योग्यताओं एवं प्रतिभाओं को बाहर निकाल सकें एवं उनका सर्वांगीण विकास कर सके, जिससे देश के भाग्य निर्माण के क्रम में यह अध्ययन करना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है क्योंकि शिक्षण अभिवृत्ति का प्रत्यक्ष प्रभाव विद्यार्थियों पर एवं अप्रत्यक्ष प्रभाव देश की प्रगति पर पड़ता है अतः विभिन्न तकनीकी की सहायता से शिक्षण अभिवृत्ति को उच्च स्तर की बनायी जा सकती है।

There is a positive objective attitude towards education in the person which fulfills the objectives of education and provides formality to him to become a teacher. A teacher is said to be qualified only when his attitude towards teaching is positive, he has speciality on his subject studies, can bring out the hidden internal abilities and talents in the students and develop them all round, so that the order of making the country's fortune. In this study it becomes very necessary because the direct effect of teaching attitude is on the students and indirect effect on the progress of the country, so with the help of various technology, teaching attitude can be made to a high level.

मुख्य बिन्दु: शिक्षण अभिवृत्ति, शहरी क्षेत्र, ग्रामीण क्षेत्र, राजकीय विद्यालय, गैर राजकीय विद्यालय इत्यादि।

Keywords: Teaching Aptitude, Urban Area, Rural Area, Government School, Non-Government School etc.

प्रस्तावना

शिक्षा वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा बालक की समस्त शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक शक्तियों का विकास होता हैं, शिक्षा वह अनुभव है जो बालक के जन्म से मृत्यु पर्यन्त तक सीखता हैं। बालक की जन्म के समय न कोई संस्कृति होती है न कोई आदर्श किन्तु जैसे-जैसे वह बड़ा होता है वह सामाजिक प्राणी बनता जाता है। उसका सर्वांगीण विकास करने एवं मानव बनाने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती हैं। (किसी भी राष्ट्र की उन्नति एवं आर्थिक स्थिति में उन्नति विज्ञान व प्रौद्योगिक क्षेत्र में शिक्षा के द्वारा निरंतर अनुसंधान व नवाचार में वृद्धि के कारण होती है।)

इसी संदर्भ में जॉन लॉक का कहना था, ''जिस प्रकार पौधों का विकास खेती की अच्छी जुताई से होता है। उसी प्रकार मानव का विकास शिक्षा द्वारा होता है।''

पौधों की अच्छी तरह देख-रेख किसान करता है उसी प्रकार बालक के विकास की जिम्मेदारी शिक्षक की होती है। (शिक्षक राष्ट्र निर्माता है और बालक देश के भावी कर्णधार हैं। शिक्षक के अपने कर्तव्य के प्रति निष्ठा, रूचि और दायित्व वहन का विद्यार्थियों की शिक्षा पर सीधा प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति के अन्दर शिक्षा के प्रति सकारात्मक, लक्ष्यात्मक दृष्टिकोण जो शिक्षा के उद्देश्यों को पूरा करता है उसे शिक्षक बनने योग्य औपचारिकता प्रदान करता है। शिक्षक की जिम्मेदारी सार्वजनिक होती है। एक शिक्षक योग्य तभी कहलाता है जब उसकी शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति सकारात्मक हो, अपने विषयगत अध्ययन पर विशेषता प्राप्त हो। छात्रों में छूपी हुई आन्तरिक योग्यताओं एवं प्रतिभाओं को बाहर निकाल सके। उनका सर्वांगीण विकास कर सकें। जिससे देश के भाग्य निर्माण के क्रम में यह अध्ययन करना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है क्योंकि शिक्षण अभिवृत्ति

का प्रत्यक्ष प्रभाव विद्यार्थियों पर एवं अप्रत्यक्ष प्रभाव देश की प्रगति पर पड़ता है। अतः विभिन्न तकनीकों का प्रयोग करते हुए शिक्षण कार्य करें।

समस्या का औचित्य

शिक्षा के क्षेत्र में जब अनुसंधान कार्य किया जाता है तो उस अध्ययन की उपयोगिता एवं महत्व का औचित्य सिद्ध करना इसलिए आवश्यक है इसके द्वारा यह सिद्ध कर सकें कि इस अनुसंधान के परिणाम व निष्कर्ष शैक्षिक जगत को किस प्रकार प्रभावित करेंगे। इसके अतिरिक्त औचित्य शैक्षिक समस्या की उपयोगिता एवं महत्व को सिद्ध करने में भी सहायक होता है।

शिक्षक एवं छात्र को जोड़ने की महत्वपूर्ण कड़ी हैं शिक्षण सुव्यवस्थित शिक्षण के लिए शिक्षक का मानसिक संतुलन एवं दृष्टिकोण अपने शिक्षण के प्रति शिक्षा की गुणवत्ता शिक्षक के व्यवहार से प्रभावित होती है। अतः शिक्षक के व्यवहार को प्रस्तुत करने का कार्य किया गया है ताकि यह ज्ञात किया जा सके कि किन-किन कारणों से शिक्षकों के व्यवहार शिक्षण के प्रति अनुरूप है तथा किन कारणों को दूर किया जा सकते हैं ताकि वे भविष्य में एक योग्य शिक्षक बन सकें।

समस्या कथन

"कोटा के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन"

उद्देश्य

1. कोटा के शहरी क्षेत्र में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. कोटा के ग्रामीण क्षेत्र में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

1. कोटा के शहरी क्षेत्रों में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. कोटा के ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

अध्ययन का परिसीमन

प्रस्तुत शोध के लिए शोधार्थी ने कोटा के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालय के 100-100 महिला शिक्षकों एवं पुरुष शिक्षकों का चयन किया गया है।

तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण

शिक्षण अभिवृत्ति

व्यक्तियों, वस्तुओं एवं किन्हीं परिस्थितियों के प्रति प्रतिष्ठा करने की सोचने की स्वाभाविक तत्परता जिसे सीख लिया गया हो जो व्यक्ति विशेष के द्वारा प्रतिक्रिया करने का विशिष्ट ढंग प्रस्तुत कर सकें।

शहरी क्षेत्र

हरी क्षेत्रों से तात्पर्य ऐसे क्षेत्र जिसकी जनसंख्या घनत्व आस-पास के क्षेत्रों की तुलना में अधिक और मानवीय सुविधाओं की प्रचुर मात्रा उपलब्ध हो शहरी क्षेत्र के अन्तर्गत आते है।

ग्रामीण क्षेत्र

ऐसे भौगोलिक क्षेत्र जो नगरों और कस्बों से बाहर होता है। ग्रामीण क्षेत्र कहलाते हैं। यहाँ जनसंख्या घनत्व नहीं होता है।

राजकीय विद्यालय

ऐसे विद्यालय जो स्थानीय राज्य या राष्ट्रीय सरकार द्वारा वित्त पोषित और नियंत्रित होते है तथा यह विद्यालय सरकार को समर्पित होते हैं।

गैर राजकीय विद्यालय

ऐसे विद्यालय जिन्हें सरकार द्वारा आंशिक वित्त नहीं दिया वह निजी विद्यालय होते है इन्हें किसी एक निजी संकाय द्वारा नियंत्रित किया जाता है जो छात्रों के ट्यूशन के द्वारा वित्त पोषित होते है।

साहित्याव्लोकन

रितेश कुमार केसरवानी (2016), "उच्च शिक्षा स्तर पर वित्त पोषित महाविद्यालयों में कार्यरत अध्यापनरत शिक्षकों के व्यावसायिक अभिवृत्ति एवं कार्य सन्तुष्टि में संबंध का अध्ययन।"

उद्देश्य : उच्च शिक्षा स्तर पर वित्त पोषित महाविद्यालय में अध्यापनरत शिक्षकों के व्यावसायिक अभिवृत्ति एवं कार्य सन्तुष्टि सम्बन्ध का अध्ययन करना।

निष्कर्ष -

1. उच्च शिक्षा स्तर पर वित्त पोषित महाविद्यालयों में अध्ययनरत शिक्षकों के व्यावसायिक अभिवृत्ति एवं कार्य सन्तुष्टि के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सह संबंध है।
2. उच्च शिक्षा स्तर पर वित्त पोषित महाविद्यालयों में अध्यापनरत महिला शिक्षकों के व्यावसायिक अभिवृत्ति एवं कार्य सन्तुष्टि के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सह सम्बन्ध नहीं है परन्तु महिला शिक्षकों के व्यावसायिक अभिवृत्ति एवं कार्य सन्तुष्टि के मध्य धनात्मक सार्थक सहसंबंध है।

अतः हम कह सकते है कि उच्च शिक्षा पर वित्त पोषित महाविद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों एवं महिला के व्यावसायिक अभिवृत्ति एवं कार्य सन्तुष्टि के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सहसंबंध है जबकि पुरुष शिक्षकों में कोई सार्थक सह संबंध नहीं है।

Saxena, Sumandeep (2020), A Study of Emotional Maturity Social Maturity And Intelligence Of Prospective Teacher In Relation To Their Teaching Aptitude.

Result

1. The propective teacher of Punjab possessed low level of teaching attitude.
2. The social maturity among prospective teachers of Punjab was of average level.
3. No significant relationship between teaching aptitude and intelligence among prospective teachers was found.

शोध विधि

प्रस्तुत शोध के हेतु सर्वेक्षण विधि एवं यादृच्छिक न्यादर्श विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श एवं जनसंख्या

प्रस्तुत शोध में यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा पुरुष शिक्षकों एवं महिला शिक्षकों का राजकीय एवं गैर राजकीय से 100 पुरुष शिक्षक एवं 100 महिला शिक्षकों का चयन किया गया है।

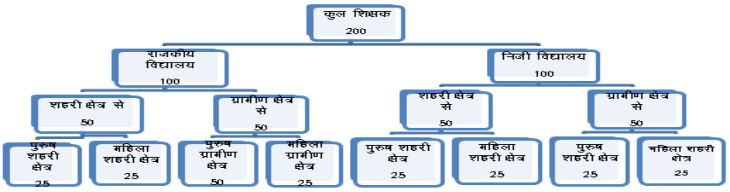

उपकरण

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्री द्वारा शिक्षण अभिवृत्ति हेतु - डॉ. उमेकुलसुम द्वारा निर्मित शिक्षण व्यवसाय मापनी का प्रयोग किया है।

सांख्यिकी

शोध की विश्वसनीयता एवं वैधता के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

परिकल्पना 1 कोटा के शहरी क्षेत्रों में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

सारणी संख्या 4.1

समूह	संख्या	मध्यमान M	प्रमाप विचलन SD	टी परीक्षण का मान	सार्थकता स्तर
शहरी क्षेत्रों में राजकीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षक	50	167.66	6.57	0.754	सार्थक अन्तर नहीं है
शहरी क्षेत्रों में गैर राजकीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षक	50	168.60	5.88		

स्वतंत्रता का अंश (df) = $N_1 + N_2 - 2 = 50 + 50 - 2 =$

df = 98 ds के लिए मान 0.05 = 1.984

df = 98 ds के लिए मान 0.01 = 2.627

व्याख्या एवं विश्लेषण

शहरी क्षेत्रों में राजकीय विद्यालय एवं गैर राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की अभिवृत्ति का मध्यमान क्रमशः 167.66 एवं 168.60 प्राप्त हुए इनका प्रमाप विचलन क्रमशः 6.57 एवं 5.88 प्राप्त हुआ। इनका टी का मूल्य 0.754 प्राप्त हुआ है जो कि स्वतंत्रता के अंश ;कद्धि 98 के लिए सार्थकता के स्तर 0.05 एवं 0.01 के मान 1.98 एवं 2.62 से कम है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष

शहरी क्षेत्रों में स्थित राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की अभिवृत्ति एवं गैर राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

परिकल्पना 2. कोटा के ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

सारणी संख्या 4.2

समूह	संख्या	मध्यमान M	प्रमाप विचलन SD	टी परीक्षण का मान	सार्थकता स्तर
ग्रामीण क्षेत्रों में राजकीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षक	50	157.80	3.36	6.265	सार्थक अन्तर है
ग्रामीण क्षेत्रों में गैर राजकीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षक	50	163.06	4.89		

स्वतंत्रता का अंश (df) = $N_1 + N_2 - 2 = 50 + 50 - 2 =$

df = 98 ds के लिए मान 0.05 = 1.98

df = 98 ds के लिए मान 0.01 = 2.62

व्याख्या एवं विश्लेषण ग्रामीण क्षेत्रों में राजकीय विद्यालय एवं गैर राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की अभिवृत्ति का मध्यमान क्रमशः 157.80 एवं 163.06 प्राप्त हुए इनका प्रमाप विचलन क्रमशः 3.36 एवं 4.89 प्राप्त हुआ। इनका टी का मूल्य 6.265 प्राप्त हुआ है जो कि स्वतंत्रता के अंश ;कद्धि 98 के लिए सार्थकता के स्तर 0.05 एवं 0.01 के मान 1.98 एवं 2.62 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की अभिवृत्ति एवं गैर राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर होता है।

शोध निष्कर्ष

परिकल्पना 1 कोटा के शहरी क्षेत्रों में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

व्याख्या एवं विश्लेषण शहरी क्षेत्रों में स्थित राजकीय विद्यालय एवं गैर राजकीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति के मध्यमान 6.57 एवं 5.88 स्वतंत्रता के अंश ;कद्धि 98 के लिए सार्थकता स्तर 0.05 एवं 0.01 के मान 1.98 एवं 2.62 से कम है। अतः यह शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

विवेचना प्रस्तुत शोध में प्राप्त परिणामों के आधार पर सामान्यीकरण किया जाता है कि शहरी क्षेत्रों में स्थित राजकीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं गैर राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति पर विद्यालय वातावरण एवं अन्य अवांछनीय तत्वों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। शिक्षकों का आपसी सहयोग, दृष्टिकोण, धैर्य, नैतिक आचरण, अनुशासन, सज्जनता इत्यादि के समावेश से शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति सकारात्मक एवं उच्च स्तर की है।

निष्कर्ष शहरी क्षेत्रों में स्थित राजकीय विद्यालय एवं गैर राजकीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

परिकल्पना 2 कोटा के ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

व्याख्या एवं विश्लेषण ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित राजकीय विद्यालय एवं गैर राजकीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति के मध्यमान 3.36 एवं 4.89 स्वतंत्रता के अंश ;कद्धि 98 के लिए सार्थकता स्तर 0.05 एवं 0.01 के मान 1.98 एवं 2.62 से अधिक है। अतः यह शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

विवेचना प्रस्तुत शोध में प्राप्त परिणामों के आधार पर सामान्यीकरण किया जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित राजकीय विद्यालय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। राजकीय विद्यालय के शिक्षकों से उच्च स्तर की पाई गई है।

जबकि राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति को विद्यानुराग प्रवृत्ति पर बल देना चाहिए। शिक्षकों को तकनीकी का ज्ञान देना चाहिए। समय-समय पर प्रशिक्षण द्वारा अभिवृत्ति को विकसित किया जा सकता है।

निष्कर्ष ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित राजकीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं गैर राजकीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर होता है।

शैक्षिक निहितार्थ

1. शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति विषय पर प्रस्तुत शोध द्वारा शिक्षकों का परिवर्तित व्यवहार समाज और राष्ट्र हित में उपयोगी होगा।
2. शिक्षकों की शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति विषय पर प्रस्तुत शोध द्वारा शिक्षक शिक्षण के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति के प्रति जागरूक होकर इससे बच सकेंगे।
3. शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि उच्च होने पर शिक्षण के प्रति सकारात्मक सोच एवं प्रभावकता व शिक्षण अभिवृत्ति का विकास होता है जिसके फलस्वरूप शिक्षक विद्यालय की प्रत्येक व्यवस्था में सुधार लाकर विद्यालय की व्यवस्था को उन्नत बना सकते है।
4. ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित राजकीय विद्यालय के शिक्षकों को ऐसे प्रेरित करना चाहिए कि उनकी उच्च कार्यकुशलता से विद्यार्थियों का भविष्य उज्ज्वल हो जाएगा। अतः ग्रामीण क्षेत्रों के राजकीय विद्यालय के पुरुष शिक्षक एवं महिला शिक्षिकाओं शिक्षण अभिवृत्ति को विकसित किया जाना चाहिए।

सुझाव

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन कोटा जिले तक ही सीमित किया है। अतः भविष्य में राजस्थान के अन्य जिलों को भी सम्मिलित कर शोध अध्ययन किया जा सकता है।
2. वर्तमान शोध अध्ययन में राजकीय विद्यालय एवं निजी विद्यालयों के शिक्षकों की अभिवृत्ति का अध्ययन किया है अतः भावी शोध में केन्द्रीय विद्यालय एवं नवोदय विद्यालय के शिक्षकों को भी सम्मिलित किया जा सकता है।
3. प्रस्तुत अध्ययन में अन्य चर अभिक्षमता, आकांक्षा स्तर एवं तकनीकी ज्ञान को सम्मिलित किया जा सकता है।
4. शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का शिक्षण अभिवृत्ति एवं प्रभावकता के बीच सहसंबंध भी ज्ञात किया जा सकता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति का अध्ययन किया हैं जिसमें शोधकत्री को निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं कि शहरी क्षेत्रों में स्थित राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति एवं गैर राजकीय विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति उच्च स्तर की पायी गई परन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण अभिवृत्ति में अन्तर पाया गया है।

शिक्षक समाज के पथ प्रदर्शक होते है। विद्यानुराग, विद्यालय वातावरण, सकारात्मक दृष्टिकोण अनुशासन, सजजनता इत्यादि के द्वारा शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति सकारात्मक एवं उच्च स्तर की जा सकती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *सक्सैना, निर्मल (2003), उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षा अल्का पब्लिकेशन, आगरा*
2. *शर्मा, शिखा चतुर्वेदी (2000), शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन एवं परामर्श, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।*
3. *शर्मा, आर.ए., शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्व एवं शोध प्रक्रिया, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।*
4. *सिंह, रामपाल (2013-14), शिक्षा का उदीयमान भारतीय समाज, अग्रवाल पब्लिकेशन।*
5. *सिंह, रामपाल, राधावल्लभ उपाध्याय, शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।*
6. *सिंह, रामपाल, ओ.पी. शर्मा (2014), शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी, श्री विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।*
7. *सेवानी, अशोक (2013), शिक्षा दर्शन एवं उभरता भारतीय समाज, अग्रवाल पब्लिकेशन।*
8. *यादव सुकेश, सवित सक्सेना (2013), शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ, साहित्य प्रकाशन आगरा।*
9. *Saxena, Sumandeep (2020), A Study of Emotional Maturity Social Maturity And Intelligence of Prospective Teacher In Relation To Their Teaching Aptitude http://shodhganga.inflibnet.ac.in:8080/jspui/handle/10603/323705*